प्रातः क्लास 11-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। यह 15 मिनट वा आधा घंटा, पौना घंटा बच्चे बैठते हैं। बाबा भी 15मिनट बिठाते हैं। कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह शिक्षा एक ही बार मिलती है। फिर कब नहीं मिलेगी। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्माभिमानी हो बैठो। यह एक ही सद्गुरु कहते हैं। इसलिये कहा जाता है एक सद्गुरु तारे, बाकी सभी गुरु बोरे। वह निमित्त बनते हैं नीचे गिराने की। अथवा विषय सागर में डूबने का रास्ता बताते हैं। वेश्यालय में ले जाने का रास्ता बताते हैं। मन्त्र मगरी कितनी है। भेंट करनी होती है। वह गुरु लोग क्या2 करते हैं। सद्गुरु क्या कहते हैं। उनमें कितना देहाभिमान है। यहां बाप तुमको देहीअभिमानी बनाते हैं। खुद भी देही है ना। समझाने लिये कहते हैं मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूं। उनको तो देहीबनकर बाप को याद करना नहीं है। याद भी वही करेंगे जो आदि सनातन देवी देवता धर्म के भाति होंगे। भाति तो बहुत होते हैं ना नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह बातें बड़ी समझने और समझाने की हैं। परमपिता परमात्मा, तुम सभी का बाप भी है- और फिर नालेजफुल भी है। आत्मा में ही नालेज रहती है ना। तुम्हारी आत्मा संस्कार ले जाती है। वही नालेजफुल है। वह बाप है यह तो सभी मानते हैं। फिर दूसरी उसमें खूबी है जो उनमें ओरली नालेज है। बीज रूप है। जैसे बाप बैठ तुमको समझाते हैं तुमको फिर औरों को समझाना है। बाप मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। फिर वह सत्य है चैतन्य है। नालेजफुल है। उनको इस सारे झाड़ की नालेज है। और कोई को भी इस झाड़ की नालेज है नहीं। आयु का भी पता नहीं है। इनको मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ कहा जाता है। इनका बीज बाप। जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। जैसे आम का झाड़ है तो उनका क्रियेटर बीज को कहेंगे ना। वह जैसे बाप हो गया। परन्तु वह जड़ है अगर चैतन्य होता तो उनको मालूम रहता ना मैं से सारा झाड़ कैसे निकलता है। परन्तु वह जड़ है। उसकी बीज नीचे बोया जाता है। यह तो है चैतन्य बीजरूप। यह ऊपर रहते हैं। तुमभी मास्टर बीजरूप बनते हो। बाप से तुमको नालेज मिलती है। वह है ऊंच ते ऊंच। पद भी ऊंच पाते हो। स्वर्ग में भी ऊंच पद चाहिए ना। यह तो मनुष्य समझते हैं स्वर्ग में देवी देवताओं का राज्य होता है। देवताओं की राजधानी में राजा-रानी प्रजा गरीब साहुकार आदि यह सभी कैसे बने होंगे। देवी देवताओं की राजाई कैसे बनी। अभी तुम जानते हो आदि सनातन देवी देवता धर्म कैसे स्थापन हो रही है। कौन करते? भगवान। मनुष्य की बुद्धि बिल्कुल तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी होने कारण कुछ भी नहीं जानते। जो कुछ होता है ड्रामा के प्लेन अनुसार। सभी ड्रामा के वश हैं। बाप भी कहते हैं मैं ड्रामा के वश हूं। मैं को भी जो पार्ट मिला हुआ है वही पार्ट बजाता हूं। वह है सुप्रीम आत्मा। उनको सुप्रीम फादर कहा जाता है। और सभी को कहा जाता है ब्रदर्स। और कोई को फादर टीचर गुरु नहीं कहा जाता। वह सभी का सुप्रीम बाप है। सुप्रीम टीचर सुप्रीम गुरु है। यह बातें भूलनी न चाहिए परन्तु भूल जाते हैं। क्योंकि नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन होती है ना। हरेक कैसे2 पुरुषार्थ करते हैं वह झट स्थूल में भी मालूम पड़ जाता है। यह बाप को याद करते हैं वा नहीं। देहीअभिमानी है वा नहीं। यह नालेज में तीखा है, एक्टिविटी से समझा जाता है। बाप कोई को स्पष्ट कुछ कहते नहीं हैं। फंकन हो जाये। अफसोस में न पड़ जाये यह बाबा ने क्या कहा। और सभी क्या कहें बाप बता सकते हैं। फलाने2 कैसी सर्विस करते हैं। सारा सर्विस पर मदार है। बाप भी आकर सर्विस करते ना। तुम समझ सकते हो। बच्चों को याद करना है बाप आत्मा से पुण्यात्मा बनने। याद की सबजेक्ट ही कठिन है। बाप योग और नालेज सिखलाते हैं। नालेज तो बहुत ही सहज है। बाकी याद में ही कई विघ्न हैं। देह-अभिमान आ जाता है। फिर यह चाहिए, यह अच्छी चीज चाहिए ऐसे2 ख्याल आते हैं। बाप कहते हैं तो तुम वनवास में हो ना। तुमको तो अभी वानप्रस्त में जाना है। फिर कोई भी ऐसी नहीं पहन सकते। अगर ऐसी कोई चीज दूं, चीज होगी तो वह खींचेगी। शरीर भी खींचेगा। घड़ी2 देह-अभिमान में ले आते हैं। इसमें मेहनत। मेहनत बिगर विश्व की बादशाही थोड़ेही मिल सकती है। मेहनत भी नम्बरवार पुरुषार्थ—

अनुसार कल्प2 तुम करते आये हो। करते रहते हैं। रिजल्ट प्रत्यक्ष होते जावेंगे। स्कूल में भी नम्बरवार ट्रान्सफर होते हैं ना। टीचर समझ जाते हैं फलाने ने अच्छी मेहनत की है। इनको पढ़ने का शौक है। फीलिंग आती हैं। उसमें तो एक क्लास से ट्रान्सफर हो दूसरे तीसरे क्लास मे जाते हैं। यहां तो यह एक ही बार पढ़ना होता है। आगे चल तुम जितना नजदीक आते जावेंगे उतना ही सभी को मालूम पड़ता जावेगा। यह बहुत मेहनत करते हैं। जरूर ऊंच पद पावेंगे। यह तो जानते हो कोई राजा रानी बनने हैं, कोई क्या बनने हैं। प्रजा भी तो बहुत बनते हैं। सारा एक्टिविटी से मालूम पड़ता है। यह देहअभिमान में कितना रहते हैं। इनका कितना लव है बाप से। बाप के साथ हो लव चाहिए ना। भाई2 का नहीं। भाई2 के लव से कुछ मिलना न है। वरसा सभी को एक बाप से ही मिलता है। बाप कहते हैं बच्चे अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। मूल बात ही यह है। याद से ही ताकत आवेंगी। दिन प्रति दिन बटरी भरती जावेगी। क्योंकि ज्ञान की धारणा भी होती जाती हैं। तीर लगता जाता है। दिन प्रति दिन तुम्हारी उन्नति नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होती रहती हैं। यह एक ही बाप टीचर सद्गुरु हैं। जो हो देही अभिमानी बनने की शिक्षा देते हैं। और कोई दे न सके। और तो सभी हैं देहअभिमानी। तो आत्माभिमानी की नालेज कोई मिलती नहीं हैं। किसको भी पता नहीं है। तुम बच्चे समझते हो बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है गुरु भी हैं। कोई मनुष्य बाप टीचर गुरु हो न सके। सब अपना2 पार्ट बजा रहे हैं। तुम साक्षी होकर देखते हो। सारा नाटक तुमको साक्षी होकर देखना भी है। एक्ट भी करना है। बाप क्रियेटर डाइरेक्टर एक्टर है ना। दुनिया का क्रियेटर डायरेक्टर है। और एक्टर भी है। शिव बाबा आकर एक्ट करते हैं। सभी का बाप है ना। बच्चे अथवा बच्चियों को आकर वरसा देते हैं। एक बाप है बाकी सभी आत्मायें भाई2 हैं। वरसा एक से ही मिलता हैं। इस दुनिया की तो कोई भी चीज बुद्धि में नहीं आती हैं। बाप कहते हैं जो कुछ देखते हो यह सभी विनाश होना है। अभी तो तुमको घर जाना है। वह लोग ब्रह्म को याद करते हैं, ब्रह्म तो घर है ना। गोया घर को याद करते हैं। समझते हैं हम ब्रह्म में जाते हैं, ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। इसको कहा जाता है अज्ञान। मनुष्य मुक्ति जीवनमुक्ति के लिये तो कुछ कहते हैं वह रांग। जो कुछ युक्ति रचते हैं सभी है रांग। राईट रास्ता तो एक बाप ही बताते हैं। बाप कहते हैं हम तुमको राजाओं का राजा बनाते हैं। ड्रामा प्लेन अनुसार। कई कहते हैं हमारी बुद्धि में नहीं बैठता है, बाबा हमारा भुला दो। कृपा करो। बाप कहते हैं इसमें बाबा की तो कुछ करने की बात ही नहीं है। मुख्य बात है तुमको डायरेक्शन पर चलना है। बाप का ही राईट डायरेक्शन मिलता है। बाकी सभी मनुष्यों की है रांग डायरेक्शन। क्योंकि सब में 5 विकार है ना। नीचे ही उतरते2 रांग बनते जाते हैं। क्या2 रीधी सिधी आदि करते रहते हैं। इन कोई सुख नहीं है। तुम जानते हो यह सभी अल्पकाल के सुख हैं। इनको कहा जाता काग विष्ठा समान सुख। सीढ़ी के चित्र पर बहुत अच्छी रीत समझाना है। और भी पर भी समझाना है। कोई भी धर्म वाले को तुम दिखा सकते हो तुम्हारा धर्म स्थापक करने वाला फलाने जगह आता है। क्राईस्ट फलाने टाईम आवेगा। जो ओ2 धर्म मे कनवर्ट हो गये हैं उनको ही यह धर्म अच्छा लगेगा। झट निकल आवेंगे। बाकी कोई को अच्छा नहीं लगेगा तो पुरुषार्थ ही कैसे करेंगे। मनुष्य2 को फांसी पर चढ़ाते हैं। तुमको तो आपे ही फांसी पर चढ़ना है। यह बड़ी मीठी फांसी है। आत्मा की बुद्धि का योग है बाप के तरफ। आत्मा को कहा जाता बाप को याद करो। मन्दर तो ऊपर रहते हैं ना। तुम समझते हो हम आत्मा हैं। हमको बाप को ही याद करना है। यह शरीर तो यहां ही छोड़ देना है। तुमको यह सारा ज्ञान है। तुम यहां बैठ क्या करते हो। भगवान से मिलने लिये पुरुषार्थ करते हो। बाप कहते हैं सबको मेरे पास आना है। तो कालों का काल हो गया ना। वह तो काल एक को ले जाते हैं। वह भी काल कोई है नहीं जो ले जाता है यह ड्रामा में सब नूंध है। आत्मा आपे ही समय पर चली जाती हैं, यह बाप तो सभी आत्माओं को ले जाते हैं।——

11-12-62

तो अभी तुम सभी का बुधियोग है अपने घर जाने लिये। शरीर छोड़ने को मरना कहा जाता है। शरीर खत्म हो गया आत्मा चली गई। तुम जानते हो जो आपे ही मरते हैं वह पद पाते हैं। बाकी तो अकाले मृत्यु सबको होना ही है। बाप को बुलाते भी हैं इसलिये हैं कि बाबा आकर हमको इस सृष्टि से ले जाओ। यहां हमको रह नहीं है। ड्रामा के प्लेनअनुसार अब वापस जाना है। कहते हैं बाबा यहां अपार दुःख है। अब यहां रहना न है। यह बहुत ही छी छी दुनिया है। मरना भी जरूर है। सबकी वानप्रस्त अवस्था है। अब वाणी से परे जाना है। तुमको कोई काल नहीं खावेगा। तुम खुशी से जाते हो। काल तब खाता है जब जबरदस्ती पकड़ते हैं। शास्त्र आदि जो भी हैं वह सभी हैं भक्ति मार्ग के। वह फिर भी भक्तिमार्ग में होंगे। यह बड़ी वन्डरफुल बातें हैं ड्रामा की। यह टेप छ घड़ी जो कुछ इस समय देखते हो वह सभी फिर होगा। इसमें मुंझने की कोई बात ही नहीं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट का अर्थ ही है हू बहू रिपीट। अभी तुम जानते हो हम फिर से तो देवी देवता बन रहे हैं। फीचर आदि सभी वही हैं। वहां आत्माएं हैं, फीचर्स भी वही होंगे ना। मनुष्य के 84 जन्म तो 84 फीचर्स होंगे। जो भी सभी फीचर्स हैं वही फिर बनेंगे। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता है। यह सभी समझने की बातें हैं। तुम जानते हो वह बेहद का बाप भी है, टीचर भी सद्गुरु भी है। ऐसा कोई भी मनुष्य हो न सके। शंकराचार्य को कोई बाप नहीं कहेंगे। इनको तुम बाबा कहते हो। प्रजापिता ब्रह्मा कहते हो। यह भी कहते हैं मेरे से तुमको वरसा नहीं मिलेगा। गांधी बापू जी प्रजापिता तो नहीं था ना। बाप कहते हैं इन बात में तुम मुंझो मत। बोलो हम ब्रह्मा को भगवान वा देवता नहीं कहते हैं। यह तो है ही पापात्मा। बाप ने बताया है बहुत जन्मों के अन्त में वानप्रस्त अवस्था में मैं इनमें प्रवेश करता हूं सारे विश्व को पावन बनाने लिये झाड़ में भी दिखाओ देखो एकदम पिछाड़ी में खड़ा है ना। अभी तो सभी तमोप्रधान जड़-जड़ीभूत अवस्था में हैं। यह भी तमोप्रधान में खड़ा है। वही फीचर्स है। इस तमोप्रधान तन में बाप प्रवेश कर इनका नाम ब्रह्मा रखते हैं। नहीं तो तुम बताओ ब्रह्मा नाम कहां से आया। यह है पतित। वह है पावन। वह पावन देवता ही फिर 84 जन्मले पतित मनुष्य बनते हैं। यह मनुष्य फिर देवता बनता है। मनुष्य को देवता बनाय फिर देवता से मनुष्य बनेगा। यह वन्डरफुल बातें हैं। यह वह बनते हैं सेकण्ड में। वह फिर 84जन्म ले यह बनते हैं। इनमें बाप प्रवेश कर पढ़ाते हैं। तुम भी पढ़ते हो। इनका भी घराना है। लक्ष्मी राधे कृष्ण के मंदिर भी हैं। परन्तु यह किसको भी पता नहीं है राधे कृष्ण पहले प्रिन्स प्रिन्सेज हैं जो फिर लक्ष्मी बनते हैं। यही वेगर टू प्रिन्स बनेंगे। पेट से इतना बड़ा तो नहीं निकलेगा ना। वेगर टू प्रिन्स, प्रिन्स से फिर वेगर बनते हैं। कितनी सहज बात है। 84 जन्मों की कहानी इन दोनों चित्रों में हैं। यह वह बनते हैं। युगल हैं इसलिये चार भुजा देते हैं। प्रवृति मार्ग है ना। निवृति मार्ग वाले तो कब यह ज्ञान दे न सके। उन्हों का पार्ट ही अलग है। वह तो सुख को मानते ही नहीं। उनको गुरु करना गोया नीचे जाना है। एक सद्गुरु ही तारे। बाकी डूबोने वाले तो वह अनेक गुरु हैं। उनमें भी तो नम्बरवन है स्त्री का पति गुरु। वह तो एकदम वेश्यालय में डूबो देते हैं। कितने अच्छी रीत समझाते हैं फिर देवीगुण भी चाहिए। स्त्री के लिये पति से पूछो वा स्त्री से पति के लिये पूछो तो झट बतलेंगे इनमें यह खामियां हैं। इस बातें में यह तंग करते हैं। या तो कहते हम दोनों ठीक चलते हैं। कोई किसको तंग नहीं करते हैं। दोनों एक दो के मददगार हो चलते हैं। कोई तो एक दो को गिराने की कोशिश करते हैं। बाप कहते हैं स्वभाव को अच्छी रीत बदलना पड़ता है। वह सभी है आसुरी स्वभाव। देवताओं का होता ही है दैवीस्वभाव। यह भी तुम जानते हो असुरों और देवताओं की युध लगी नहीं है। असुर थे कलियुग में देवताएं थे सतयुग में। फिर दोनों युध लगे, देवताओं ने जीता, यह तो हो नहीं सकता। पुरानी दुनिया और नई दुनिया के आपस में मिल कैसे सकते। बाप बैठ समझाते हैं यह गीता मनुष्यों ने बैठ बनाई है। पार्ट जो होकर गई है उनका बैठ लिखा है। इनको कहानियां कहें। त्योहार आदि सभी यहां के हैं। द्वापर से

लेकर ही त्योहार मनाते हैं। सतयुग में नहीं मनाये जाते। यह सभी बुधि से समझने की बातें हैं। देहअभिमान कारण बच्चे बहुत पायन्द भूल जाते हैं। नालेज तो सहज है। 7रोज में सारी नालेज धारण हो सकती है। पहले अटेन्शन चाहिए याद की यात्रा पर। तुम्हारी भट्ठी बनी उसमें तो कोई फर्स्ट ग्रेड निकले कोई सेकण्ड ग्रेड कोई थर्ड ग्रेड। कोई तो भागन्ती हो गये फोर्थ ग्रेड में। फिर स्वर्ग में तो आवेंगे ही। बहुत कम से कम पद पावेंगे। जिसको भी ज्ञान की टचिंग हुई है वे आवेंगे जरूर। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी सारा घराना स्थापना होना है। थोड़ा भी परिचय दिया तो प्रजा में चले जावेंगे। ढेर प्रजा बनने की है। वजीर तो वहां होता ही नहीं। फिर द्वापर में शुरू होता है एक वजीर। अभी तो अनेक वजीर हैं। फिर नो वजीर होगा। ल0ना0 को वजीर की दरकार नहीं। आगे राजाओं को फिर एक वजीर होता था। अभी तो देखो ढेर वजीर हैं। रानी को कितने वजीर होंगे। पार्लियामेन्ट है ना। सिर्फ अपनी बुधि से थोड़ेही काम करते होंगे। सभी राय छांट2 कर लेते हैं। अभी यहां बाप क्या करते हैं। कोई लिखत पढ़ते हैं? कुछ भी नहीं। वह तो याद कर फिर पढ़ते हैं। गीता भी याद कर फिर बैठ सुनाते हैं। उनको बहुत होशियार समझते हैं। अजय है गीता। तुम्हारी बुधि में है गीता का भगवान बाप सर्व का सदगति दाता है। वही सारी सृष्टि की सदगति करते हैं। यहां बैठे तुम ब्राह्मण बच्चों द्वारा सर्व की सदगति करते हैं। टीचर पहले से थोड़े ही सब बता देंगे। पढ़ने में टाईम तो लगता है। एक ही समय सब थोड़ेही पढ़ा देंगे। यह भी भल एक ही सबजेक्ट है। परन्तु मेहनत है। इसमें पावन बनना होता है। और कोई भी सतसंग आदि में पावन बनने की बात नहीं रहती। सन्यासियों का तो मार्ग ही अलग है। उनमें नागे भी होते हैं वह अलग हैं। नागों के भी बड़े लश्कर होते हैं। जंगल में रहते हैं। इसमें सब मेल्स ही होते हैं। उन्हों के पास दवाईयां ऐसी होती है जो कर्म इन्द्रियों को निसता कर देते हैं। अभी तुम समझते हो यह भी ड्रामा में सब नूंध है। फिर यह सभी रिपीटहोगा। तुमसे समझकर तो बहुत ही जाते हैं। फिर किस के तकदीर में जितना है। तुमसर्विस तो बहुत करते हो। अपने2 ज्ञान और योगबल के अनुसार। इसमें योग का बल बहुत चाहिए। देहीअभिमानी चाहिए। मूल बात है देहीअभिमानी बनना है। बाप मिला है घर ले जाने लिये। इस पतितदुनिया में अपार दुःख है। बाप इस पतितदुनिया से ले जाते हैं अपने घर। यहां का हिसाब किताब चुकुत कर सब नम्बरवार जावेंगे। तुम बच्चों को सारे झाड़ का भी मालूम पड़ गया है। मनुष्य कितने गपोड़े लगाते रहते हैं। बाप तो सच्ची बात सुनाते हैं। इस संगम युग का भी अभी तुमको पता पड़ा है जब कि बाप पुरुषोत्तम बनाने आते हैं। यहपुरुषोत्तम संगम युग है यह बुधि में रहना है। पुरानी दुनिया का अन्त और नई दुनिया का आदि है। तो पुरुषोत्तम बनना ही है। मुक्ति में जावें तो भी पुरुषोत्तम, जीवनमुक्ति में जावें तो भी पुरुषोत्तम। यह नालेज आत्मा को मिलती है। आत्मा ही धारण कर संस्कार ले जाती है साथ में। हम सो का अर्थ भी बच्चों को समझाया है। वह लोग तो हम सो का अर्थ कितना लम्बा चौड़ा कर देते हैं। तुम तो समझते हो हम अर्थात आई एम आत्मा। हम बाप के सन्तान हैं। हम सो का अर्थ भीतुमको समझाना पड़े ना। हम सो ब्राह्मण फिर हमसो देवता फिर हम सो क्षत्री ..... अभी हम ब्राह्मण बने हैं फिर हम देवता बनेंगे। यह तो छठा की बात है। सारी नालेज तुम्हारी बुधि में अभी है। फिर यहप्रायः लोप हो जावेंगे। वहां यह मालूम हो फिर तो सुख की भावना ही न रहे। यही सोच रह जाये हम फिर नीचे गिरेंगे। बाप कहते हैं यह ज्ञान सारा प्रायः लोप हो जाता है। फिर तुम देवतायें सुख में आ जाते हो। वहां तो बहुत सहज। बाप फिर कहते हैं मुझे याद करो। अभी तो कोई भी सम्पूर्ण बना नहीं हैं। टाईम पर बनेंगे ना। अभी तो अजन बहुत काम चाहिए। ज्ञान में अच्छे हैं योग में बहुत कम हैं। योग का जौहर बड़ा अच्छा चाहिए। तबही किसको ज्ञान का तीर लग सकता है अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।